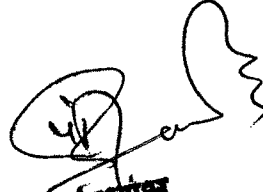


डॉ. पी. एस. पाटील  
अध्यक्ष, हिंदी विभाग  
शिवाजी विश्वविद्यालय,  
कोल्हापुर - ४१६ ००४

### संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री. संजय बापू आठके का  
"डॉ. शिवप्रसाद सिंह के अलग अलग वैतरणी उपन्यास का अध्ययन"  
लघुबोध प्रबंध परीक्षणार्थ अंगीकृत किया जाए।

३० जून, १९९५  
कोल्हापुर

  
अध्यक्ष  
हिन्दी विभाग,  
शिवाजी विश्वविद्यालय,  
कोल्हापुर - ४१६००४

डॉ.सो. अविन्तका गो. कुलकर्णी,  
निवृत्त रीडर एवं अध्यक्ष,  
हिन्दी विभाग,  
श्रीमती मधुबाई गरवारे कन्या महाविद्यालय,  
सांगली.

- प्र मा ण प त्र -

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि श्री संजय बापू आडके ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत "डॉ. शिवासाद सिंह के "अलग अलग दैतणी" उपन्यास का अध्ययन" शीर्षक लघु-शोध-प्रबन्ध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। इसमें प्रस्तुत विचार एवं विवेचन मेरी जानकारी में मौलिक हैं। प्रस्तुत शोधकार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

सांगली।

दिनांक : 30-९-९५

*A. Kulkarni*

( डॉ.सो. अविन्तका गो.कुलकर्णी )

शोध निर्देशक.

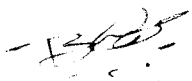
...

- प्र क्वा प न -

यह लघु-शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल. के लघु-शोध-प्रबन्ध के स्तर में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना पहले इस विश्वविद्यालय की या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

कोल्हापुर ।

दिनांक : 30/6/34

  
( संजय आठके )  
शोध-छात्र

...

(शिवप्रसाद सिंह आधुनिक हिन्दी साहित्य के एक कथाकार सशक्त हस्ताक्षर, बहुमुखी प्रतिभा के धनी और कथाकार के स्तर में विश्व प्रसिद्ध है।) उनका साहित्य अनुठी रचनाओं के साथ साथ, तमाम सामाजिक समस्याओंकी सहज अभिव्यक्ति है।

मु. प्रेमचन्द के बाद ग्रामीण जीवन का सही चित्रण प्राप्त हो गया था लेकिन हिन्दी नयी कहानी के विशिष्ट कथाकार शिवप्रसाद सिंह जी का ("अलग अलग पैतरणी" उपन्यास पढ़ने के बाद आम आदमी का जीवन दस्तावेज प्रस्तुत करनेवाले पचासोत्तर हिन्दी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर शिवप्रसाद सिंह जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को जान लेने की लालसा निर्माण हुई।) उनके साहित्य ने मेरे मनमें घर बना लिया। उनके कुछ उपन्यास और कहानियोंने मुझे बेहद प्रभावित किया। इसीलिए मैंने निश्चय किया कि सिंह जी के "अलग अलग पैतरणी" उपन्यास का अध्ययन करना चाहिए। साथ ही साथ उनके व्यक्तित्व को जान लेना चाहिए।

दूसरी तरफ मुझे इस लघु-शोध-प्रबन्ध के विषययाम के पीछे डॉ. गो.रा. कुलकर्णी तथा डॉ.सौ. अपीन्तका कुलकर्णी जी की प्रेरणा भी आधारभूत रही है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध का विषय है - "डॉ. शिवप्रसाद सिंह के अलग अलग पैतरणी उपन्यास का अध्ययन।"

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न थे।

- (१) डॉ. शिवप्रसाद सिंह जी का व्यक्तित्व किस प्रकार का था और उनका पूरा जीवन किस तरह बीता ?

- (2) उन्होंने अपने जीवन में किस प्रकार के साहित्य की निर्मिति की है ?
- (3) उन्होंने कौन कौनसी औपन्यासिक कृतियाँ लिखीं ?
- (4) "अलग अलग पैतरणी" में कौन कौनसी समस्याएँ पित्रा हुई है ?
- (5) उपन्यास - कला की दृष्टि से अलग अलग पैतरणी उपन्यास कहाँ तक मेल खाता है ?

इन सभी सवालों के जवाब पाने की कोशिश प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध में की है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभाजित है। प्रथम अध्याय में डॉ. शिवप्रसाद सिंह जी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का लेखा जोखा प्रस्तुत किया है। किसी भी साहित्यकार की कृति को पढ़ने से पहले उनके व्यक्तित्व पर एक नजर डालनी चाहिए। सिंह जी के व्यक्तित्व निर्माण में किन-किनका योगदान रहा इसका वर्णन तथा सिंह जी के रचना संसार का संक्षेप में विवरण दिया गया है। उन की कहानियाँ उपन्यास नाटक तथा उनका अन्य प्रकाशित साहित्य इन समीक्षा मूल्यांकन किया गया है और उनकी विशेषताएँ संक्षेप में बताई गयी है।

द्वितीय अध्याय में सिंह जी के प्रकाशित औपन्यासिक कृतियों का संक्षेप में परिचय दिया गया है।

तृतीय अध्याय में "अलग अलग पैतरणी" उपन्यास में पित्रा परिवर्तों का पित्रा किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में "अलग अलग पैतरणी" उपन्यास में कौन कौनसी समस्याएँ उजागर हुई है इसका विवरण किया है।

पंचम अध्याय में "अलग अलग पैतरणी" उपन्यास की उपन्यास काल की दृष्टिसे समीक्षा की गयी है।

इन महत्वपूर्ण पाँच अध्यायों के बाद उपसंहार है। यह इस पूरे लघु-शोध-प्रबन्ध का सारांश है। पाँच अध्यायों के अध्ययन के बाद जो निष्कर्ष मिले उसका विवरण इसमें किया गया है।

प्रबन्ध के अंत में परिशिष्ट दिया गया है। इस में संदर्भ ग्रंथ सूची और सहायक ग्रंथ सूची को क्रमबद्धता से दिया गया है। प्रत्येक संदर्भ ग्रंथ का प्रकाशन एवं संस्मरण भी दिया गया है।

इस लघु-शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा प्रोत्साहित करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मेरा आद्य कर्तव्य है।

यह लघु-शोध-प्रबन्ध मेरी प्ररमप्रिय मार्गदर्शिका प्राध्यामिका डॉ.सौ. अविन्तका गो. कुलकर्णी "मधुबाई गरवारे कन्या महाविद्यालय", सांगली के निर्देशन में लिखा गया है। यदि आपका मार्गदर्शन न मिल पाता तो यह कार्य असंभव बन जाता। आपके पास ज्ञान का सागर है। मैंने तो उस सागर में से कुछ ही बूंदों को पा लिया है। सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजूद आपने बार बार प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मुझे अमोल सहाय्यता की इसलिये मैं आपका हमेशा हमेशा के लिये ऋणी हूँ। आप के आत्मीय निर्देशन ने इस शोध कार्य के अंतर्गत आनेवाली कठिनाइयों को कभी अनुभव नहीं होने दिया तथा इस प्रबन्ध की एक एक पंक्ति सूक्ष्मता से देखने का कार्य किया। यदि आप बार बार मुझे सजग न करती तो शायद यह लघु शोध प्रबन्ध अधूरा रह जाता। आपका शान्त स्नेह स्वभाव, आत्मीयता स्नेहपूर्ण भाव एवं योग्य प्रथदर्शन के लिये मैं अतीव कृतज्ञ हूँ।

आदरणीय गुरुवर्य डॉ. वसंत मोरे, प्रा. सम.के. तिवले,  
प्रा.सौ. सम.सस. जाधव, तथा प्रा.कु. रजनी भागवत जी का सहयोग तथा आशिर्वाद मेरे साथ रहे। उनके प्रति सविनय आभार प्रकट करता हूँ।

श्रीवाजी विश्वविद्यालय के बॅ.छैकर ग्रंथालय के ग्रंथमाल तथा अन्य ग्रंथालय में कार्य करनेवाले लोगों ने मेरी सहायता की इसलिये मैं उनका आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे फुल्ले भाई प्रा.राजेंद्र हिरकुडे तथा भाभी प्रा. सौ. उज्वला चावरे (हिरकुडे) ने मुझे बार बार प्रोत्साहित एवं उत्साहित किया तथा महावीर महाविद्यालय के (बी.ए.बी.एड.) हिन्दी विभाग के अध्यापक प्रा. राजेंद्र रोट्टे तथा प्रा.सौ. रस.रम.पाटील मॅडम जी ने भी इस लघु-शोध-प्रबन्ध के लेख्य कार्य में अच्छा योगदान दिया तथा सहायता की इसलिये मैं उनका आभारी हूँ।

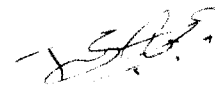
मेरे साथी रफिक बंदीवाले, भीमराव घरापले, सुधाकर वाणी, रत्नाथ पाटील, विश्वंभर कुलकर्णी, अनिल साळुंके, प्रदिप पाटील, सुरेश लटकोळे का भी आभार प्रकट करता हूँ।

दादी माँ, माता-पिता, चाचा-चाचियाँ, भाई-बहन, तथा अन्य मित्रोंकी सहाय्यता तथा शुभकामनाएँ मेरे साथ रही इसलिये मैं उनका हमेशा हमेशा के लिये ऋणी हूँ।

कल्पवृक्ष पॅरिटेबल ट्रस्ट, जयसिंगपुर संघलित पत्नीवडे हायस्कूल, पत्नीवडे के मेरे सभी अध्यापक साथी तथा ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री शांतीनाथ (आण्णा) पाटील तथा ऑनरररी सेक्रेटरी श्री माण्णावे सर तथा अन्य महत्वपूर्ण सदस्यों का भी मैं सहृदय से आभार प्रकट करता हूँ। जिन्होंने मुझे समय समयपर इस लघु-शोध-प्रबन्ध के लिये अवकाश प्राप्त करा दिया और सहकार्य किया।

अंत में प्रबन्ध का टंकलेखन तथा उसे सर्वांग सुंदर बनानेवाले श्री राजेंद्र मोहिते इनका मैं आभार प्रकट करते हुए यह लघु-शोध-प्रबन्ध विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

आपका कृपापार्थी,



( श्री रस.बी. आडके )

शोध-छात्र

कोल्हापुर ।

दिनांक : 30/4/84